भारत के पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध 2004 के बाद

नाम – शीला देवी

राजनीति–विज्ञान

द्वितीय महायुद्व के पश्चात् स्वतन्त्र होने वाले राज्यों के लिए यह नितान्त असम्भव था, कि वे शीत शुद्व और द्वि ध्रुवीकरण के जाल से मुक्त होकर किसी विदेश नीहित का निर्माण करे जो राष्ट्रीय व्यक्तित्व को बनाए रख सके। 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र होने वाले देश भारतवर्ष वह प्रथम देश सिद्व हुआ जिससे न केवल अद्वितीय प्रतिभा से स्वतन्त्र विदेश नीति का निर्माण ही किया बल्कि स्वतन्त्र होने वाले राज्यों को भी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में द्विध्रुवीकरण के अन्तर्गत अपने व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिए एक सफल मार्ग का दिग्दर्शन भी कराया तथा स्वतन्त्र रहकर अन्य पड़ोसी देशों से मधुर सम्बन्ध स्थापित किए। भारत के प्रमुख पड़ोसियों में पाकिस्तान व चीन को सम्मिलित किया गया तथा छोटे पड़ोसियों में श्रीलंका व बंगलादेश, भूटान आदि को सम्मिलित किया गया है। दो पड़ोसी देशों के बीच विवादस्पद सम्बन्धों की लम्बी सूची वाले उदाहरणों में भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध सबसे प्रमुख है, दोनों देश की ऐतिहासिक समानता, सांसकृतिक एकरूपता, भौगोलिक निकटता आर्थिक अन्तनिर्भरता के बाद भी मित्रता के बजाय 'दूर के पड़ोसियों' वाले सम्बन्ध बन रहे हैं। स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद से आज तक दोनों देशों के सम्बन्ध प्रतियोगिता, संघर्ष एवं युद्व की सीमा से बाहर नहीं निकले हैं, इनके सम्बन्ध संघर्ष से शान्ति, फिर संघर्ष, फिर शान्ति को भी दिशा में आगे तो बढ़े है किन्तु मित्रता व सहयोग से परे रहे हैं। इनके बीच निरन्तर शीतशुद्व व दो बार वास्तविक युद्व हो चुके हैं। दोनों देशों के बीच तनाव शैश्ल्यि सम्बन्धों का काल

' यादव, आर.एस. भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र. 356
' ए. अप्पादोराय व राजन एम.एस., इंडियाज फोरन पालिसी एण्ड रिलेशन्ज, नई दिल्ली, प्र. 125

बहुत कम समय रहा है। दोनों देशों के सम्बन्धों की इस स्थिति का अनुमान 1947 से आज तक लगाया जा सकता है।

भारत–पाकिस्तान के बीच सम्बन्ध :

भारत व पाकिस्तान के बीच सबसे महत्वपूर्ण एवं विवादास्पद विषय कश्मीर का रहा है, दोनों देशों के बीच वैमनस्य एवं शत्रुता का कारण बना हुआ है। भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम 1947 में भारत के देशी राजाओं के राज्यों को अंग्रेजों की पराधीनता से स्वतन्त्र होने में छूट दे दी गई। कश्मीर राज्य भी आता था, वहां का शासन हरि सिंह लम्बे समय तक कोई निर्णय नहीं ले पाया, जब कबालियों ने कश्मीर का काफी हिस्सा अपने कब्जे में कर लिया तथा वे श्रीनगर से मात्र 35 मील दूर रह गए तथा राजा हरि सिंह ने भारत से सैनिक सहायता की मांग की, इसी समय उसने 26 अक्तूबर 1947 को कश्मीर राज्य का भारत में विलय के पत्र भी हस्ताक्षर कर दिए। कश्मीर के विलय की घोषणा के बाद भारत ने कश्मीर की ओर बढ़ रहे कबालियों को रोकने का प्रयास किया तब इन आक्रमणकारियों ने कश्मीर का कुछ क्षेत्र अपने अधिकार में ले लिया था।

' गुप्ता सिसिर कश्मीर : ए स्टडी इन इण्डिया – पाकिस्तान रिलेशन, बम्बई, 1966
' फाडिया बी.एल., अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, प्र. 380

भारत और भूटान के बीच सम्बन्ध :

भूटान के साथ भारत के मित्रवत् सम्बन्ध प्राचीन काल से रहे, दोनों देशों के बीच वीजा मुक्त आवागमन की संधि होने के कारण इस तरह की घुसपैठ रोकने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा था। विमान यात्रा की भांति ही आने–जाने वालों के लिए दस्तावेज अनिवार्य बना दिये ताकि तीसरे देश के नागरिकों की घुसपैद को रोका जा सकेगा।

भूटान के नरेश जिग्मे सिंजे वांग चुक 14 सितम्बर 2004 को भारत की पांच दिवसीय यात्रा पर आये। भूटान और भारत की सीमा पर चल रही आतंकवादी गतिविधियों पर भारत सरकार की चिन्ता पर सहमति व्यक्त की। दोनों देशों ने अपनी भूमि एक दूसरे के राष्ट्रीय हितों के खिलाफ उपयोग नहीं होने देंगे। दोनों देशों ने जल विद्युत के क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से विद्युत परियोजना के समझौता पर हस्ताक्षर किए।

भारत और श्रीलंका के बीच सम्बन्ध :

दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार सन् 2004 में 1.30 अरब डालर की उंचाई पर पहुंच गया है। एफ.टी.ए. (मुक्त व्यापार समझौता) पहले जहां भारत की 15 रूपये की कमाई पर श्रीलंका मात्र एक रूपया अर्जित करता था वहीं अब एक रूपये से साढे चार रूपये का हो गया है। राष्ट्रीय ताप ऊर्जा निगम (एन.टी.पी.) भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड और भारतीय रेलवे की सहायक इकाई राईटस ने श्रीलंका में बुनियादी सुविधाएं विकसित करने की इच्छा व्यक्त की है। भारत–श्रीलंका व्यापार में भागीदार इंडियन ऑयल कार्पोरेशन रहा है। सूचना प्रौघोगिकी क्षेत्र में टाटा कंसलटेंसी ने श्रीलंका में अपना एक केन्द्र खोला है,

' खन्ना बी.एन. अरोड़ा लिपाक्षी, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र. 120

इंफोसिस टेक्नॉलाजीज के अध्यक्ष एन.आर. नारायण मूर्ति श्रीलंकाई के प्रधानमंत्री के आई.टी. सलाहकार है।

भारत–बंगलादेश के बीच सम्बन्ध 2004 :

भारत–बंगलादेश के बीच अक्तूबर 2004 में मुक्त व्यापार के समझौते पर वार्ता शुरू हो गई, इसमें छः मुद्दों – 1) प्रवासी बांगलादेशी 2) उपप्लव 3) सीमा विवाद 4) हिन्दू विरोधी हिंसा 5) गंगाजल विवाद 6) व्यापार विवाद
15 से 17 सितम्बर 2004 तक ढाका में चली वार्ता के दौरान क्षेत्रों में बाड़ लगाने का काम जल्दी ही पूरा करलेगा। आपराधिक मामलों में एक दूसरे की कानूनी मदद करने के समझौते का प्रारूप भी प्रस्तुत किया, दोनों देशों ने सक्रिय उग्रवादियों को शरण दिये जाने, उनके प्रशिक्षण शिविर चलाने, हथियार मिलने के मामले को जोर–शोर से उठाया था। 1 अक्तूबर 2004 का सीमा सुरक्षा बल तथा बांगलादेश रायफल के बीच सम्पन्न हुई।

निष्कर्ष :

इस प्रकार भारत की विदेश नीति अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ संबंधों को बढ़ाने के आधार को ध्यान में रखकर बनाई गई है। यह विश्व शान्ति और विवादों के शान्तिपूर्ण समाधान का समर्थन करती है। भारत हिंसा और युद्व का विरोध करता है, इसकी संयुक्त राष्ट्र के सिद्वान्तों में पूरी आस्था है और वह अपनी स्वतन्त्रता के प्रथम पांच देशों में संयुक्त राष्ट्र के साथ पूर्ण सहयोग करता रहा है। भारत निःशस्त्रीकरण का समर्थक है और परमाणु अस्त्रों से विश्व को मुक्ति दिलवाना चाहता है। इसके अतिरिक्त भारत की नीतियां हमेशा पड़ोसियों के संबां सुधारने वाली रही है। वर्तमान समय में पाकिस्तान के साथ भी संबंध मधुर होते चले आ रहे हैं। अतः स्वतन्त्रता प्राप्ति से अब तक भारत पड़ोसी देश से संबंध सुधारने की

' हरीश कपूर इंडियन फारेन पालिसी 1947, 1992 नई दिल्ली, प्र. 118

लगातार बल्कि सम्पूर्ण विश्व में शान्ति स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उपर्युक्त तथ्यों ने हमें 1990 के बाद भारत एवं उसके राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों का अध्यन भारत के लिए उत्साहित किया।

(शीला देवी)
मकान नं0 1193, सैक्टर–9
करनाल (हरियाणा)
मोब0 : 9991870779